# शक्तिका परिचयात्मक विवेचन

## ग्रन्थमालाकी संयुक्त भूमिका

देवताओंके विषयमें अध्यात्मशास्त्रीय जानकारी मिलनेपर, उनके विषयमें श्रद्धा निर्माण होनेमें सहायता मिलती है । श्रद्धासे उपासना भावपूर्ण होती है, ऐसी उपासना अधिक फलदायी होती है ।

शक्तिपूजककोंको एवं शक्तिकी सांप्रदायिक साधना करनेवालोंको इस ग्रन्थमें दी हुई अध्यात्मशास्त्रीय जानकारी निश्चित उपयोगी होगी; परंतु साधारण व्यक्तिको इस संदर्भमें आगे दिए हुए नियम ध्यानमें रखने चाहिए। कुछ लोगोंको रामायण पढनेपर श्रीरामकी, गणपति अथर्वशीर्ष पढनेपर श्री गणपतिकी उपासना करनेकी इच्छा होती है । इस ग्रन्थमालामें दी जानकारी पढकर कुछ लोगोंको लग सकता है कि हम भी श्री लक्ष्मी, श्री दुर्गा आदि देवियोंकी उपासना करें; परंतु इस प्रकारकी उपासनासे सभीकी आध्यात्मिक उन्नति वेगसे नहीं होती; क्योंकि श्री लक्ष्मी, श्री दुर्गा आदि देवियोंकी उपासना करना आवश्यक हो, तभी उस उपासनाका अधिक लाभ होता है, अन्यथा बहुत साधना करनेपर भी थोडी प्रगति होती है । सामान्य व्यक्ति नहीं समझ सकता कि उसके लिए शक्तिकी उपासना आवश्यक है अथवा नहीं । अतएव वे केवल जानकारीके लिए यह ग्रन्थमाला पढें । शक्तिकी अनुभूति पानेकी दृष्टिसे साधनाके पहले चरणमें अपने कुलदेवताका नामजप करें । कुलदेवता अर्थात कुलदेव अथवा कुलदेवी । कुलदेवताकी उपासनाके विषयमें जानकारी प्रस्तुत ग्रन्थमालामें दी है । (श्री लक्ष्मी, श्री दुर्गा आदि कुलदेवता हों, तो उनकी उपासना अवश्य करें।) यदि गुरुने अन्य किसी देवीका नामजप करनेके लिए कहा हो, अथवा साधनाके अगले चरणमें आध्यात्मिक उन्नति हेतु उस देवीका नामजप करना आवश्यक हो, तो इस ग्रन्थमालामें दी जानकारीसे देवीके प्रति श्रद्धा बढेगी । अन्योंको ग्रन्थकी जानकारी पढकर विभिन्न देवियोंके विषयमें कुछ नया समझमें आया, ऐसा लगेगा ।

यह ग्रन्थमाला पढकर भक्तोंकी देवीपर श्रद्धा बढे, एवं सभीको साधना करनेकी प्रेरणा मिले, यह श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है । – **संकलनकर्ता**

## अनुक्रमणिका

[कुछ वैशिष्ठ्यपूर्ण सूत्र (मुद्दे) '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।]


१. व्युत्पत्ति एवं अर्थ २१

२. शक्तियोंके नाम, सामर्थ्य तथा गुणोंका संभ्रम २२

३. आद्याशक्ति २२

३ अ. अर्थ २२

३ आ. कुछ अन्य नाम २३

३ इ. तीन मुख्य रूप : महाकाली, महालक्ष्मी एवं महासरस्वती २४

४. शक्तियोंकी निर्मिति २४

४ अ. किसी देवताद्वारा निर्मिति २४

४ आ. देवताओंकी शक्तियोंके एकत्रीकरणसे निर्मिति २४

५. प्रकार २५

* भगवानकी शक्तियां : अंतरंग, तटस्थ एवं बहिरंग २५

* 'विद्या' और 'मोहिनी' २५

* कार्यानुसार प्रकार : उत्पत्ति, स्थिति व लयसे संबंधित शक्तियां २६

* ब्रह्मदेवसे संबंधित शक्ति : ब्रह्माणी एवं सरस्वती २७

* श्रीविष्णुसे संबंधित शक्ति : श्री लक्ष्मी २८

* शिवसे संबंधित शक्ति : पार्वती ३३

* श्री गणपतिसे संबंधित शक्ति : शारदा ५३

* देवताओंसे संबंधानुसार प्रकार ५४

* गौणशक्ति : योगिनी, मातृका एवं नदीरूप शक्ति (गंगा, नर्मदा एवं कुछ अन्य पवित्र नदियां) ५५

* योगमार्गानुसार प्रकार * मनुष्यसे संबंधित शक्ति ६२

* मानसिक एवं आध्यात्मिक गुणोंपर आधारित मनःशक्ति ६३

* शक्तिका उपयोग करनेवालेकी वृत्तिके अनुसार ६४

* उन्नत पुरुषोंकी शक्ति एवं उसका व्यय होनेके कुछ कारण ६४
* इष्ट एवं अनिष्ट शक्ति ६६

**६. सप्तलोक एवं शक्ति की मात्रा** ६८

**७. कार्य** ६८

* किसी भी कार्यसिद्धिके लिए शिव एवं शक्ति दोनों आवश्यक ६८
* लक्ष्मीतंत्रानुसार कार्य ६९

**८. मर्यादा** ६९



**सनातनकी दृश्यश्रव्य-चक्रिका (वीसीडी)**

## शारदीय नवरात्रि (शास्त्र एवं विधियोंका परिचय)

**विधि प्रत्यक्ष रूपसे कैसे करें, इस संबंधी विशेष लघु चलचित्र-सहित**

सुहागिन पूजन

- घटस्थापनापूर्व धार्मिक आचार
- 'घटस्थापना' विधि एवं 'मालाबंधन'
- कुमारिका एवं सुहागिन पूजन
- अखंड दीप स्थापित करनेकी पद्धत
- देवीकी षोडशोपचार पूजा एवं अंगपूजा

**'हरितालिका' एवं 'ज्येष्ठागौरी' व्रतोंसंबंधी वीसीडी उपलब्ध !**

**सनातनके प्रकाशन नियमित क्रय करनेवाले पाठकोंसे विनती !**

सनातनके नूतन ग्रन्थोंके विषयमें जानकारी पानेके लिए संपर्क करें –

**prasarsahitya@gmail.com** अथवा **चल-दूरभाष : ९३२२३१५३१७**

**'सनातन'के ग्रन्थ 'ऑनलाइन' क्रय करने हेतु उपलब्ध - www.SanatanShop.com**

**श्री गणेशभक्ति बढानेवाला सनातनका ग्रन्थ : श्री गणपति**